

दानियेल की पुस्तक - संख्या उनहत्तर

1888 के विद्रोह का खुलासा: लाओदीकियन एडवेंटिज़्म की दूसरी पीढ़ी से मिले सबक

Jeff Pippenger

2024-02-12

लाओदीकियाई एडवेंटवाद की दूसरी पीढ़ी 1888 में आई, और उस पीढ़ी को यहजेकेल के आठवें अध्याय में प्रतीकात्मक रूप से दूसरी घृणित बात के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो "उसकी कल्पनाओं के कक्ष" द्वारा दर्शाई गई है।

तब मैं भीतर गया और देखा; और देखो, हर प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु, और घृणित पशु, और इस्राएल के घराने की सब मूर्तियाँ, चारों ओर दीवार पर अंकित थीं। और उनके सामने इस्राएल के घराने के पुरनियों में से सत्तर पुरुष खड़े थे, और उनके बीच में शाफान का पुत्र याजन्याह खड़ा था; हर एक के हाथ में अपनी धूपदान थी, और धूप का घना बादल ऊपर उठ रहा था। तब उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने देखा कि इस्राएल के घराने के पुरनिये अँधेरे में क्या करते हैं—हर एक अपने चित्रों के कक्षों में? क्योंकि वे कहते हैं, यहोवा हमें नहीं देखता; यहोवा ने देश को त्याग दिया है। यहजेकेल 8:10-12.

कल्पनाओं के कक्ष उन लोगों के हृदयों में छिपे दुष्ट रहस्यों का प्रतीक हैं, जिन्हें प्राचीन पुरुष कहा गया है, और उन्होंने उसी दुष्टता को केवल अपने मन के कक्षों में ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के पवित्रस्थान के कक्षों में भी ले आए हैं।

बुरी दृष्टि रखने वाले की रीटी मत खा, और उसके स्वादिष्ट व्यंजनों की इच्छा भी न करना; क्योंकि जैसा वह अपने मन में सोचता है, वैसा ही वह है। वह तुझसे कहता है, खा और पी; पर उसका मन तेरे साथ नहीं है। नीतिवचन 23:6, 7.

चित्रों के कक्षों की दुष्टता मंदिर की दीवारों पर और बुजुर्गों के मन की दीवारों पर दोनों पर लिखी हुई है। यहजेकेल अध्याय आठ के दूसरे घृणित कर्म के गुप्त चित्रों के कक्ष लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म की दूसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, और चार घृणित कर्मों में से दूसरा घृणित कर्म एक सामूहिक विद्रोह को अधिक विस्तार से रेखांकित करता है, यद्यपि चारों घृणित कर्म ऐसे दिखाए गए हैं कि वे उन्हीं पुरुषों द्वारा किए गए जो लोगों के रक्षक होने चाहिए थे।

उद्धार का चिह्न उन पर रख दिया गया है जो 'किए जाने वाले सब घृणित कामों के कारण आहें भरते और रोते हैं।' अब मृत्यु का दूत निकल पड़ता है, जिसे यहजेकेल के दर्शन में वध करने के हथियार लिए हुए पुरुषों द्वारा दर्शाया गया है, जिन्हें यह आज्ञा दी गई: 'बूढ़ों और जवानों, दोनों को, कुँवारियों, छोटे बच्चों और स्त्रियों को पूरी तरह मार डालो; पर जिस किसी व्यक्ति पर चिह्न हो उसके निकट न आना; और मेरे मन्दिर से आरम्भ करना।' भविष्यद्वक्ता कहता है: 'उन्होंने उन प्राचीन पुरुषों से आरम्भ किया जो भवन के सामने थे।' यहजेकेल 9:1-6. विनाश का कार्य उन लोगों के बीच आरम्भ होता है जिन्होंने अपने आप को लोगों के आत्मिक रक्षकों के रूप में घोषित किया है। झूठे पहरेदार सबसे पहले गिरते हैं। न किसी पर दया की जाती है, न किसी को छोड़ा जाता है। पुरुष, स्त्रियाँ, कुँवारियाँ, और छोटे बच्चे साथ-साथ नाश हो जाते हैं। महान विवाद, 656.

दूसरी पीढ़ी के आगमन को चिह्नित करने वाला विद्रोह विशेष रूप से लाओदिकियाई एडवेंटवाद के नेतृत्व से संबंधित है; इसकी पूर्ति 1888 में मिनियापोलिस में हुई जनरल कॉन्फ्रेंस की बैठक में हुई। इसे "इस्राएल के घराने के प्राचीन" और "सत्तर पुरुष" की अभिव्यक्तियों द्वारा दर्शाया गया है। मूसा के कार्य के साथ सत्तर प्राचीन जुड़े थे, और यीशु के शिष्यों के दूसरे समूह में सत्तर पुरुष थे। "सत्तर" नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे "प्राचीन" भी। दूसरी घृणित बात नेतृत्व पर अतिरिक्त जोर देती है, और ऐसा करते हुए वह उस घृणित बात को नेतृत्व के सामूहिक विद्रोह से संबंधित ठहराती है।

सत्तर प्राचीन पुरुषों के बीचों-बीच "Shaphan का पुत्र Jaazaniah" खड़ा था। "Jaazaniah" नाम का अर्थ "ईश्वर द्वारा सुना गया" है, और वह ऐसे नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करता है जिसने ठीक उसी समय विद्रोह किया जब ईश्वर बोल रहे थे, क्योंकि उसने ईश्वर की बात तो सुनी, पर मानने से इनकार कर दिया; उसने यह दावा किया कि ईश्वर ने अपने लोगों को त्याग दिया है, और कि गुप्त कक्षों में जो कुछ हो रहा था, उसे ईश्वर देखते नहीं थे। Jaazaniah "Shaphan का पुत्र" था, और "Shaphan" नाम का अर्थ "छिपाना" है। दूसरी पीढ़ी का यह संदर्भ उस नेतृत्व के विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है जिसने ठीक उसी समय विद्रोह किया जब ईश्वर बोल रहे थे, और वे मानते थे कि ईश्वर उनके कर्मों को न तो देखते थे और न ही उनकी परवाह करते थे।

सिस्टर वाइट ने यह दर्ज किया कि 1888 की जनरल कॉन्फ्रेंस के दौरान उन्हें लाओदिकीय एडवेंटिज़्म के नेतृत्व की बातचीतें दिखाई गईं। 1888 की जनरल कॉन्फ्रेंस में परमेश्वर ने सिस्टर वाइट को नेताओं की वे बैठकें दिखाई जो उन्होंने आपस में की थीं, जब वे सोचते थे कि परमेश्वर सुन नहीं रहा है। वहाँ अपने कमरों की गोपनीयता में उन्होंने सिस्टर वाइट, उनके पुत्र, और एल्डर जोन्स और वैगनर के विरुद्ध बुराई की। वे मानते थे कि वे खुलकर बोल सकते हैं, क्योंकि उनके निजी कक्षों में परमेश्वर उन्हें देख नहीं सकता, परंतु परमेश्वर ने इन्हीं बातचीतों को भविष्यवक्ता को दिखाया। वे एक आधिकारिक बैठक में थे, और ईश्वरीय प्रेरणा के अनुसार वे अंतिम वर्षा का संदेश सुन रहे थे, पर उन्होंने सुनने से इंकार कर दिया।

ऐसी कौन-सी बात थी जिसने ऐसा नेतृत्व पैदा किया, जिसने 1888 में इतना खुला विद्रोह किया कि बहन वाइट ने उसकी तुलना कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह से की?

जब आप पवित्र आत्मा से प्रबुद्ध होंगे, तब आप मिनियापोलिस की सारी दुष्टता को वैसा ही देखेंगे जैसी वह है, जैसा परमेश्वर उसे देखता है। यदि इस संसार में मैं आपको फिर कभी न देखूँ, तो निश्चित रहें कि आपने बिना किसी कारण जो शोक, क्लेश और आत्मा पर बोझ मुझ पर डाला है, उसे मैं आपको क्षमा करता हूँ। परन्तु आपकी आत्मा के हित के लिए, और उसके खातिर जो आपके लिए मरा, मैं चाहता हूँ कि आप अपनी भूलें देखें और उन्हें स्वीकार करें। आप उन लोगों के साथ मिल गए जिन्होंने परमेश्वर की आत्मा का विरोध किया। आपके पास वह सब प्रमाण थे जिनकी आपको आवश्यकता थी कि प्रभु भाई जोन्स और भाई वैगनर के माध्यम से कार्य कर रहे थे; परन्तु आपने प्रकाश को ग्रहण नहीं किया; और उन भावनाओं को बढ़ावा देने और सत्य के विरुद्ध कहे गए वचनों के बाद, आप यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए कि आपने गलत किया था, कि इन व्यक्तियों के पास परमेश्वर का संदेश था, और आपने संदेश तथा संदेशवाहकों दोनों को हल्के में लिया था।

हमारे लोगों के बीच मैंने इससे पहले कभी भी उतनी दृढ़ आत्मसंतुष्टि और प्रकाश को स्वीकारने तथा मानने की उतनी अनिच्छा नहीं देखी, जितनी मिनियापोलिस में प्रकट हुई। मुझे दिखाया गया है कि उस सभा में प्रकट हुए जिस भाव को जिन्होंने संजोए रखा, उस दल में से एक भी तब तक फिर से ऐसा स्पष्ट प्रकाश नहीं पाएगा, जिससे वे स्वर्ग से उन्हें भेजे गए सत्य की बहुमूल्यता को पहचान सकें, जब तक कि वे अपना घमंड न झुकाएँ और यह स्वीकार न करें कि वे परमेश्वर के आत्मा से संचालित नहीं थे, बल्कि उनके मन और हृदय पूर्वाग्रह से भरे हुए थे। प्रभु उनके निकट आना चाहता था, उन्हें आशीष देना चाहता था और उनकी पश्चगामिता से उन्हें चंगा करना चाहता था, परन्तु उन्होंने कान न दिया। वे उसी आत्मा से संचालित थे जिसने कोरह, दातान और अबीराम को प्रेरित किया था। इस्राएल के वे पुरुष यह ठान चुके थे कि वे हर उस प्रमाण का विरोध करेंगे जो उन्हें गलत सिद्ध करे, और वे अपने विद्रोह के मार्ग पर लगातार बढ़ते गए, यहाँ तक कि बहुत से लोग बहका लिए गए और उनके साथ मिल गए।

ये कौन थे? न तो दुर्बल, न अज्ञानी, न अप्रबुद्ध। उस विद्रोह में मंडली के बीच प्रसिद्ध दो सौ पचास प्रधान थे, नामी पुरुष। उनकी गवाही क्या थी? 'समूची मंडली पवित्र है, उनमें हर एक; और प्रभु उनके बीच में है; तो फिर तुम अपने आप को प्रभु की मंडली से ऊपर क्यों उठाते हो?' [गिनती 16:3]। जब कोरह और उसके साथी परमेश्वर के न्याय के अधीन नाश हो गए, तब जिन लोगों को उन्होंने धोखा दिया था, उन्होंने इस चमत्कार में प्रभु का हाथ नहीं देखा। अगली सुबह समूची मंडली ने मूसा और हारून पर यह आरोप लगाया, 'तुमने प्रभु की प्रजा

को मार डाला' [पद 41], और महामारी मंडली पर आ पड़ी, और चौदह हज़ार से अधिक लोग मर गए।

जब मैंने मिनियापोलिस छोड़ने का निश्चय किया, तो प्रभु का दूत मेरे पास खड़ा हुआ और कहा: 'ऐसा कदापि नहीं; परमेश्वर ने तेरे लिए इस स्थान पर करने को एक काम रखा है। लोग कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह को दोहरा रहे हैं। मैंने तुझे तेरे उचित पद पर रखा है, जिसे जो लोग ज्योति में नहीं हैं, मानेंगे नहीं; वे तेरी गवाही पर ध्यान नहीं देंगे; पर मैं तेरे साथ रहूँगा; मेरा अनुग्रह और मेरी शक्ति तुझे संभाले रखेगी। वे तेरा नहीं, परन्तु दूतों और उस संदेश का तिरस्कार कर रहे हैं जिसे मैं अपनी प्रजा के पास भेजता हूँ। उन्होंने प्रभु के वचन का तिरस्कार किया है। शैतान ने उनकी आँखों को अंधा कर दिया है और उनकी निर्णय-बुद्धि को विकृत कर दिया है; और जब तक हर आत्मा अपने इस पाप से—यह अपवित्र स्वच्छन्दता जो परमेश्वर के आत्मा का अपमान कर रही है—मन न फिराएगा, वे अंधकार में चलेंगे। यदि वे मन न फिराएँ और बदलकर लौट न आएँ कि मैं उन्हें चंगा करूँ, तो मैं दीवत को उसके स्थान से हटा दूँगा। उन्होंने अपनी आत्मिक दृष्टि को धुंधला कर दिया है। वे नहीं चाहते कि परमेश्वर अपना आत्मा और अपनी शक्ति प्रगट करे; क्योंकि मेरे वचन के विषय में उनमें उपहास और घृणा की आत्मा है। हल्केपन, तुच्छ बातों में पड़ना, ठट्टा-मज़ाक और हँसी-ठिठोली प्रतिदिन की जाती हैं। उन्होंने मुझे ढूँढ़ने के लिए अपना हृदय नहीं लगाया है। वे अपनी ही सुलगाई हुई चिंगारियों के प्रकाश में चलते हैं, और यदि वे मन न फिराएँ तो शोक में पड़े रहेंगे। प्रभु यों कहता है: अपने कर्तव्य के पद पर डटे रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और न तुझे छोड़ूँगा और न त्यागूँगा।' परमेश्वर की इन बातों की अवहेलना करने का मैंने साहस नहीं किया।

बैटल क्रीक में प्रकाश स्पष्ट, उज्ज्वल किरणों में चमकता रहा है; परन्तु मिनियापोलिस की उस बैठक में भाग लेने वालों में से कौन ऐसा है जो प्रकाश के पास आया हो और वे सत्य के समृद्ध खजाने ग्रहण किए हों जिन्हें प्रभु ने स्वर्ग से उनके लिए भेजे थे? किसने नेता, यीशु मसीह, के साथ कदम से कदम मिलाया है? किसने अपने भ्रमित उत्साह, अपनी अंधता, अपनी ईर्ष्याओं और बुरी शंकाओं, सत्य के प्रति अपने विरोध की पूर्ण स्वीकारोक्ति की है? एक भी नहीं; और प्रकाश को स्वीकार करने में उनकी लंबी उपेक्षा के कारण वह उन्हें बहुत पीछे छोड़ गया है; वे अनुग्रह में और हमारे प्रभु मसीह यीशु के ज्ञान में बढ़ते नहीं रहे। वे उस आवश्यक अनुग्रह को ग्रहण करने में असफल रहे हैं जिसे वे पा सकते थे, और जो उन्हें धार्मिक अनुभव में दृढ़ व्यक्ति बना देता।

मिनियापोलिस में जो रुख अपनाया गया, वह मानो एक अजेय बाधा बन गया, जिसने उन्हें बड़े पैमाने पर संदेहियों, प्रश्न करने वालों, और सत्य तथा परमेश्वर की शक्ति को अस्वीकार करने वालों के साथ ही सीमित कर दिया। जब एक और संकट आएगा, तो वे लोग जिन्होंने इतने लंबे समय तक प्रमाण पर प्रमाण का विरोध किया है, फिर से उन्हीं बिंदुओं पर परखे जाएंगे जहाँ वे इतने स्पष्ट रूप से असफल हुए थे; और उनके लिए यह कठिन होगा कि वे जो परमेश्वर की ओर से है उसे स्वीकार करें और जो अंधकार की शक्तियों की ओर से है उसे अस्वीकार करें। इसलिए उनके लिए सुरक्षित एकमात्र मार्ग यही है कि वे नम्रता में चलें, अपने पैरों के लिए सीधे पथ बनाते हुए, कहीं ऐसा न हो कि लंगड़ा मार्ग से हट जाए। हम किनके साथ संगति रखते हैं, इससे बहुत फर्क पड़ता है—क्या हम उनके साथ हैं जो परमेश्वर के साथ चलते हैं और उस पर विश्वास और भरोसा रखते हैं, या उनके साथ जो अपनी मानी हुई बुद्धि का अनुसरण करते हैं, अपनी ही सुलगाई हुई चिंगारियों में चलते हुए।

सत्य के विरुद्ध काम करने वालों के प्रभाव को निष्प्रभावी करने के लिए जो समय, ध्यान और परिश्रम लगाना पड़ा है, वह एक भयंकर हानि रहा है; क्योंकि हम आध्यात्मिक ज्ञान में वर्षों आगे हो सकते थे; और यदि वे लोग, जिन्हें ज्योति में चलना चाहिए था, प्रभु को जानने के लिए आगे बढ़ते—ताकि वे जान लें कि उसका आगमन प्रभात के समान निश्चित है—तो बहुत-सी, बहुत-सी आत्माएँ कलीसिया में जोड़ दी गई होतीं। परन्तु जब कलीसिया के भीतर ही इतना अधिक परिश्रम उन कार्यकर्ताओं के प्रभाव का प्रतिकार करने में लगाना पड़ता है जो परमेश्वर अपने लोगों को जो सत्य भेजता है उसके विरुद्ध ग्रेनाइट की दीवार बनकर खड़े रहे हैं, तब संसार तुलनात्मक अंधकार में छोड़ दिया जाता है।

परमेश्वर की इच्छा थी कि प्रहरी उठ खड़े हों और एकजुट स्वर में, तुरही को स्पष्ट ध्वनि देते हुए, एक निर्णायक संदेश घोषित करें, ताकि सभी लोग अपने-अपने कर्तव्य-स्थल पर तत्पर हो जाएँ और उस महान कार्य में अपना भाग निभाएँ। तब उस दूसरे स्वर्गदूत का, जो बड़ी सामर्थ्य के साथ स्वर्ग से उतरता है, प्रबल और स्पष्ट प्रकाश

अपनी महिमा से पृथ्वी को भर दिया होता। हम वर्षों पीछे रह गए हैं; और जो लोग अंधेपन में खड़े रहे और उसी संदेश की उन्नति में बाधा बने, जिसे परमेश्वर चाहता था कि वह मिनीयापोलिस की सभा से जलते दीपक के समान आगे बढ़े, उन्हें चाहिए कि वे परमेश्वर के सामने अपने हृदय को दीन करें और देखें-समझें कि उनके मन के अंधेपन और हृदय की कठोरता के कारण कार्य किस प्रकार बाधित हुआ है। मैन्युस्क्रिप्ट रिलीज़, खंड 14, 107-111.

ऐसा क्या था जिसने 1888 में इतनी खुली बगावत प्रदर्शित करने वाले नेतृत्व को जन्म दिया, कि सिस्टर वाइट ने उसकी तुलना कोरह, दातान और अबीराम की बगावत से की? उसका उत्तर निस्संदेह 1863 की बगावत में निहित है, जिसने उस बात के लिए मार्ग तैयार किया जिसके विषय में यहजेकेल से कहा गया था कि वे और भी बड़े घृणित कर्म होंगे। लैव्यव्यवस्था 26 के 'सात बार' को अस्वीकार करना और एक नकली चार्ट प्रस्तुत करना, 1863 की जालसाजी को बनाए रखने की आवश्यकता पैदा कर देता। इस प्रकार, मिलर यह देखते कि उनके रत्न बिखेर दिए गए और कचरे तथा नकली रत्नों और सिक्कों से ढँक दिए गए। एक दुनियावी कहावत कहती है, 'इतिहास विजेताओं द्वारा लिखा जाता है।'

वास्तव में विजयी न होते हुए भी, लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट कलीसिया का नेतृत्व करने वालों ने चार पीढ़ियों के दौरान बढ़ते विद्रोह को सहारा देने वाला एक ऐतिहासिक आख्यान गढ़ने में समय और परिश्रम लगाया है, ताकि उस विद्रोह को ऐसी रोशनी में पेश किया जाए जो स्वर्गदूतों द्वारा दर्ज वास्तविक इतिहास से बहुत दूर हो। इतिहास का पुनर्लेखन कैथोलिक कलीसिया के जेसुइटों की एक विशिष्ट पहचान रहा है, और ऐतिहासिक पुनर्लेखन लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट इतिहासकारों का भी एक स्थायी हथकंडा रहा है। आजकल लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट "इतिहासकार" मिनीयापोलिस जनरल कॉन्फ्रेंस सत्र के बारे में जो लिख रहे हैं, वह ऐतिहासिक पुनर्लेखन का एक क्लासिक उदाहरण है।

उस सम्मेलन के कुछ विद्रोही अंततः पश्चाताप कर गए होंगे, लेकिन नियम का अपवाद नियम को नकारता नहीं। बहन व्हाइट को वहीं ठहरकर बैठक का कार्यवृत्त दर्ज करने का आदेश दिया गया था, क्योंकि कोरह, दाथान और अबीराम का विद्रोह दोहराया जा रहा था। एडवेंटिस्ट इतिहासकार यदि गवाही को इस बात के इर्द-गिर्द केंद्रित करते हैं कि 'विश्वास द्वारा धर्मो ठहराए जाने' के संदेश को समझा गया था या नहीं; अस्वीकार किया गया था या नहीं, अथवा बाद में स्वीकार किया गया था, तो वे उस प्रेरित गवाही से कतराते हैं जो कोरह, दाथान और अबीराम द्वारा प्रतीकित विद्रोह की थी।

मूसा के वृत्तांत के अनुसार, उन तीन विद्रोहियों में से कौन बाद में पश्चातापी हुआ और मूसा के साथ नेतृत्व में फिर से स्वीकार किया गया?

कोरह, जो इस आंदोलन का अग्रणी नेता था, कोहात कुल का एक लेवीवंशी और मूसा का चचेरा भाई था; वह एक योग्य और प्रभावशाली व्यक्ति था। मिलाप के तंबू की सेवा के लिए नियुक्त होने पर भी वह अपनी स्थिति से असंतुष्ट हो गया और याजकाई की गरिमा पाने की आकांक्षा करने लगा। याजक का पद हासून और उसके घराने को दिए जाने से—जो पहले हर परिवार के पहिलौठे पुत्र पर निहित था—ईर्ष्या और असंतोष को जन्म दिया, और कुछ समय से कोरह छिपे रूप से मूसा और हासून के अधिकार का विरोध कर रहा था, यद्यपि उसने खुले विद्रोह का कोई कदम नहीं उठाया था। अंततः उसने नागरिक और धार्मिक दोनों अधिकारों को उलट देने की साहसी योजना बना ली। उसे सहानुभूति रखने वाले लोग भी मिल गए। मिलाप के तंबू के दक्षिणी ओर, कोरह और कोहाती लोगों के तंबूओं के पास ही, रूबेन गोत्र की छावनी थी; इस गोत्र के दो सरदार दातान और अबीराम के तंबू कोरह के तंबू के निकट थे। ये सरदार सहज ही उसकी महत्वाकांक्षी योजनाओं में शामिल हो गए। याकूब के ज्येष्ठ पुत्र के वंशज होने के नाते वे दावा करते थे कि नागरिक अधिकार उन्हीं के हैं, और उन्होंने याजकाई के सम्मान को कोरह के साथ बाँट लेने का निश्चय किया।

लोगों के मनोभाव कोरह की योजनाओं के अनुकूल थे। अपनी निराशा की कड़वाहट में उनके पुराने संदेह, ईर्ष्या और घृणा फिर लौट आए, और उनकी शिकायतों का निशाना फिर उनके धैर्यशील नेता पर था। इस्राएली लगातार इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करते जा रहे थे कि वे दिव्य मार्गदर्शन के अधीन थे। वे यह भूल गए कि वाचा का दूत उनका अदृश्य नेता था, कि बादल के स्तंभ से आच्छादित होकर मसीह की उपस्थिति उनके आगे-आगे चलती थी, और कि मूसा अपने सारे निर्देश उसी से प्राप्त करते थे।

"वे उस भयंकर दंडादेश के आगे झुकने को तैयार नहीं थे कि उन्हें सबको जंगल में ही मरना होगा, और इसलिए वे हर बहाने को पकड़ लेने को तैयार थे ताकि यह मान सकें कि उन्हें परमेश्वर नहीं, बल्कि मूसा ही चला रहा है और उसी ने उनके विनाश का निर्णय सुना दिया था। पृथ्वी पर सबसे नम्र मनुष्य के सर्वोत्तम प्रयास भी इस प्रजा की अवज्ञा को शांत नहीं कर सके; और यद्यपि उनकी पूर्व हठधर्मिता पर परमेश्वर की अप्रसन्नता के चिन्ह, उनकी टूटी हुई पंक्तियों और घटती संख्या में, अभी भी उनके सामने थे, फिर भी उन्होंने उस पाठ को हृदय से नहीं लगाया। फिर वे प्रलोभन से पराजित हो गए।" पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता, 395, 396.

लाओदीकियाई एडवेंटवाद की शुरुआत 1856 में हुई, और 1863 में यह कानूनी रूप से पंजीकृत लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट कलीसिया बन गया। जैसा कि पिछले लेखों में बताया गया है, ऐसी कोई ईश्वरीय प्रेरणा से दी गई गवाही नहीं है कि लाओदीकिया का कभी उद्धार होता है। अपनी दशा से पश्चाताप किए बिना और फिलाडेल्फिया द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए अनुभव को स्वीकार किए बिना उसका उद्धार संभव नहीं है। लाओदीकिया एक ऐसी प्रजा है जिसका न्याय इस प्रकार होता है कि प्रभु उसे अपने मुख से उगल देता है। लाओदीकियाई कलीसिया के रूप में, ईश्वरीय प्रेरणा यह दर्शाती है कि यह कलीसिया प्राचीन इस्राएल की तरह मरुभूमि में भटकने के लिए नियत थी।

प्राचीन इस्राएल के विद्रोहियों में से कौन चालीस वर्ष मरुभूमि में भटका और फिर प्रतिज्ञात देश में प्रवेश किया? एक भी नहीं, और उनका भटकना आधुनिक इस्राएल के भटकने का प्रतीक था।

कोरह, दातान और अबीराम का विद्रोह (जो 1888 के विद्रोह का प्रतीक था) इस बात पर आधारित था कि वे उस निर्णय को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, जिसमें लोगों को चालीस वर्ष तक मरुभूमि में भटकने के लिए ठहराया गया था। 1888 का विद्रोह इस बात पर आधारित था कि नेतृत्व ने उस घोषणा को अस्वीकार कर दिया, जो उन्हें लाओदिकिया के रूप में पहचानती थी और उनकी अवज्ञा के कारण उन्हें मरुभूमि में कई और वर्षों तक भटकने के लिए ठहराती थी।

"A. T. Jones और E. J. Waggoner द्वारा हमें दिया गया संदेश लाओदीकिया की कलीसिया के लिए परमेश्वर का संदेश है, और हाथ हर उस व्यक्ति पर जो सत्य को मानने का दावा करता है, फिर भी दूसरों की ओर परमेश्वर-प्रदत्त किरणों का परावर्तन नहीं करता।" *The 1888 Materials*, 1053.

वे बुजुर्ग पुरुष, जो 1888 में लोगों के संरक्षक होने वाले थे, यह मानते थे कि वे "धनी हैं और संपत्ति में बढ़े हुए हैं"। अगले लेख में हम यह विचार करेंगे कि 1888 से पहले इस स्थिति का कारण क्या था।

मेरी आत्मा अत्यंत दुखी हो जाती है यह देखकर कि जिन्होंने प्रकाश और सत्य पाया है, वे कितनी शीघ्रता से शैतान के छल को स्वीकार कर लेते हैं और मिथ्या पवित्रता से मोहित हो जाते हैं। जब लोग उन सीमाचिह्नों से मुँह मोड़ लेते हैं जिन्हें प्रभु ने इसलिए स्थापित किए हैं कि हम भविष्यवाणी में अंकित अपनी स्थिति को समझ सकें, तब वे किस ओर जा रहे हैं, उन्हें पता ही नहीं होता।

मुझे संदेह है कि वास्तविक विद्रोह कभी ठीक किया जा सकता है। 'Patriarchs and Prophets' में कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह का अध्ययन कीजिए। यह विद्रोह विस्तृत था; इसमें दो से अधिक पुरुष सम्मिलित थे। यह सभा के दो सौ पचास प्रधानों—प्रतिष्ठित पुरुषों—के नेतृत्व में था। विद्रोह को उसके सही नाम से और धर्मत्याग को उसके सही नाम से पुकारिए, और फिर यह विचार कीजिए कि परमेश्वर के प्राचीन लोगों के अनुभव को, उसकी सारी आपत्तिजनक बातों सहित, इतिहास का भाग बनने के लिए निष्ठापूर्वक लिपिबद्ध किया गया था। धर्मशास्त्र कहता है, 'ये बातें ... हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई हैं, जिन पर संसार का अन्त आ पहुँचा

है।' और यदि सत्य का ज्ञान रखने वाले स्त्री-पुरुष अपने महान नेता से इतने दूर हो गए हैं कि वे धर्मत्याग के महान नेता को ग्रहण करके उसे 'मसीह हमारी धार्मिकता' नाम दे दें, तो इसका कारण यही है कि वे सत्य की खानों में गहराई तक नहीं उतरे हैं। वे बहुमूल्य अयस्क को निकृष्ट पदार्थ से अलग पहचान नहीं पाते।

उन चेतावनियों को पढ़ो जो परमेश्वर के वचन में झूठे भविष्यद्वक्ताओं के विषय में इतनी प्रचुरता से दी गई हैं, जो अपनी विधर्मी शिक्षाएँ लेकर आएँगे और, यदि संभव हो, तो चुने हुए जनों को भी भ्रमित कर देंगे। इन चेतावनियों के बावजूद, कलीसिया झूठे और सच्चे में भेद क्यों नहीं करती? जो किसी भी प्रकार से इस प्रकार गुमराह हुए हैं, उन्हें परमेश्वर के सामने स्वयं को दीन करना और सच्चे मन से पश्चाताप करना चाहिए, क्योंकि वे इतनी आसानी से बहक गए हैं। उन्होंने सच्चे चरवाहे की आवाज़ और अजनबी की आवाज़ में भेद नहीं किया है। ऐसे सब लोग अपने अनुभव के इस अध्याय की फिर से समीक्षा करें।

अर्धशताब्दी से भी अधिक समय से परमेश्वर अपने आत्मा की गवाहियों के माध्यम से अपने लोगों को प्रकाश देता आ रहा है। इतने लंबे समय के बाद क्या अब कुछ पुरुषों और उनकी पत्नियों पर यह छोड़ दिया गया है कि वे श्रीमती व्हाइट को धोखेबाज़ और छलिया घोषित करके समस्त विश्वासियों की कलीसिया का भ्रम दूर करें? 'उनके फलों से तुम उन्हें पहचानोगे।'

जो लोग उन सभी साक्ष्यों को, जो परमेश्वर ने उन्हें दिए हैं, अनदेखा कर सकते हैं और उस आशीष को शाप में बदल देते हैं, उन्हें अपनी ही आत्माओं की सुरक्षा के लिए कांपना चाहिए। यदि वे पश्चाताप न करें तो उनका दीपदान अपने स्थान से हटा दिया जाएगा। प्रभु का अपमान किया गया है। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्वर्गदूतों के संदेशों के सत्य का ध्वज धूल में घसीटे जाने के लिए छोड़ दिया गया है। यदि प्रहरियों को इस प्रकार लोगों को गुमराह करने के लिए छोड़ दिया जाए, तो उसके झुंड को किस प्रकार का चारा दिया जा रहा था, यह परखने के तीक्ष्ण विवेक के अभाव के लिए परमेश्वर कुछ आत्माओं को उत्तरदायी ठहराएगा।

धर्मत्याग की घटनाएँ हो चुकी हैं, और प्रभु ने अतीत में इस प्रकृति की बातों को इसलिए पनपने दिया है कि यह दिखाया जा सके कि उसके लोग कितनी आसानी से भ्रमित हो सकते हैं, जब वे स्वयं पवित्र शास्त्रों को परखने के बजाय मनुष्यों के वचनों पर निर्भर करते हैं—जैसा कि उदात्त बेरेआ के लोगों ने किया था—यह देखने के लिए कि क्या ये बातें सच हैं। और प्रभु ने इस प्रकार की बातों को होने दिया है ताकि यह चेतावनी दी जा सके कि ऐसी बातें होंगी।

विद्रोह और धर्मत्याग उसी हवा में घुले हैं जिसे हम साँस लेते हैं। जब तक हम विश्वास से अपनी असहाय आत्माओं को मसीह के हवाले न कर दें, तब तक हम उनसे प्रभावित होंगे। यदि लोग अभी इतनी आसानी से बहक जाते हैं, तो जब शैतान मसीह का रूप धरकर चमत्कार करेगा, तब वे कैसे टिकेंगे? तब उसकी भ्रामक प्रस्तुतियों से कौन अचल रह पाएगा—जब वह स्वयं को मसीह बताता होगा, जबकि वास्तव में वह केवल शैतान होगा, जो मसीह का रूप धारण किए हुए और मानो मसीह के कार्य करता हुआ दिखाई देगा? परमेश्वर के लोगों को झूठे मसीहों को अपनी निष्ठा समर्पित करने से क्या रोके रखेगा? 'उनके पीछे मत जाना।'

सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए। जो लोग सत्य का प्रचार करने के लिए नियुक्त किए गए हैं, उन्हें लंगर डाले रहना चाहिए; तब उनका जहाज़ आँधी-तूफ़ान के सामने टिके रहेगा, क्योंकि लंगर उन्हें मज़बूती से थामे रहता है। धोखे बढ़ते जाएँगे, और हमें विद्रोह को उसके सही नाम से पुकारना है। हमें संपूर्ण शस्त्र पहनकर खड़े रहना है। इस संघर्ष में हमारा सामना केवल मनुष्यों से नहीं, बल्कि प्रधानताओं और शक्तियों से होता है। हमारा संघर्ष मांस और रक्त के विरुद्ध नहीं है। हमारी कलीसियाओं में इफिसियों 6:10-18 को ध्यानपूर्वक और प्रभावशाली ढंग से पढ़ा जाए। Notebook Leaflets, 57, 58.